गुरु में गुरुत्व को प्रखर करने की आवश्यकता

तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए एआईसीटीई के निदेशक डॉ. अमित दत्ता, गुरुग्राम विश्वविद्यालय के कुलपति संजय कौशिक, जेबीएम विश्वविद्यालय के अध्यक्ष गुरुदत्त अरोड़ा, महाराजा अग्रसेन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के उपाध्यक्ष एस.पी. गोयल, राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी, दिल्ली, नॉर्थ कैंप यूनिवर्सिटी की कुलपति नूपुर प्रकाश, जयपुर से इग्नू के सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. कमलेश मीणा, ब्र.कु. सुदेश, ब.कु. सुमन, ब.कु. विनय एवं अन्य।

गुरुग्राम-ओआरसी(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में शिक्षाविदों के तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन संस्थान के शिक्षा प्रभाग द्वारा 'अवेकनेड एजुकेटर्स इनलाइटेन्ड जेनरेशन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में अखिल भारतीय तकनिकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) के निदेशक डॉ. अमित दत्ता ने कहा कि शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन आज ऐसे लगता है कि गुरु का गुरुत्व खो सा गया है। आवश्यकता है उस गुरुत्व को वापस लाने की। गुरुग्राम विश्वविद्यालय के कुलपति संजय कौशिक ने कहा कि आज डिप्रेशन सबसे बड़ी बीमारी बनकर उभरा है। जिसका प्रमुख कारण शिक्षा में आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों का अभाव है। एक आदर्श शिक्षक कई पीढ़ियों का सुधार कर सकता है। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में आध्यात्मिक मूल्यों पर ज़ोर दिया जाना एक अतुलनीय कार्य है। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि मनुष्य सब कुछ सीख चुका है लेकिन मनुष्य-मनुष्य की तरह रहना भूल गया है। आध्यात्मिकता हमें जागरूक करती है। संस्थान के दिल्ली हरि नगर क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी ने कहा कि जागरूक शिक्षक वो है जिसके जीवन में मूल्यों

- **एक अच्छे शिक्षक के अंदर अच्छे विद्यार्थी का होना जरूरी - आशा दीदी**
- **ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शिक्षाविदों के लिए तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का सफल आयोजन**

का समावेश है। शिक्षक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। शिक्षक को चरित्र निर्माता भी कहा जाता है। जेबीएम विश्वविद्यालय के अध्यक्ष गुरुदत्त अरोड़ा ने कहा कि समाज में परिवर्तन तभी आयेगा जब हमारे विचारों में परिवर्तन आयेगा। अभिभावकों की भी ये ज़िम्मेवारी है कि बच्चों को एक श्रेष्ठ चिंतन दें। महाराजा अग्रसेन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के उपाध्यक्ष एस.पी. गोयल ने कहा कि आध्यात्मिक मूल्यों को जीवन में उतारना जरूरी है। खुशहाल जीवन के लिए योग जरूरी है। संस्थान के शिक्षा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. सुदेश ने कार्यक्रम के प्रारंभ में अपना स्वागत वक्तव्य दिया। शिक्षा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. सुमन ने शिक्षा प्रभाग द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी दी। प्रभाग के दिल्ली ज़ोन की संयोजिका ब्र.कु. विजया ने सबको राजयोग की गहन अनुभूति कराई। ब्र.कु. चांद ने गीत के द्वारा सबका स्वागत किया। कार्यक्रम में मंचासीन मेहमानों का सम्मान तिलक, पटका एवं तुलसी के पौधे भेंट कर किया गया। मंच संचालन ब्र.कु. दिव्या ने किया। कार्यक्रम में 300 से भी अधिक शिक्षाविदों एवं अन्य लोगों ने शिरकत की। कार्यक्रम में दिल्ली,नॉर्थ कैंप यूनिवर्सिटी की कुलपति नूपुर प्रकाश एवं जयपुर से इग्नू के सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. कमलेश मीणा की भी उपस्थिति रही।

चरित्र निर्माण से ही होगा सर्व समस्याओं का समाधान

- **ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा तीन दिवसीय राष्ट्रीय महिला सम्मेलन**
- **आध्यात्मिकता से महिला सुरक्षा विषय पर हुआ आयोजन**
- **1000 से भी अधिक महिलाओं एवं अन्य लोगों ने लिया भाग**

गुरुग्राम-ओआरसी(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में तीन दिवसीय 'आध्यात्मिकता से महिला सुरक्षा' विषय पर राष्ट्रीय महिला सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में इंडियन योगिनी एसोसिएशन की संस्थापक अध्यक्ष डॉ. आर. एच. लता ने अपने सम्बोधन में कहा कि महिला सुरक्षा के लिए आध्यात्मिकता ज़रूरी है। आध्यात्मिकता हमें अन्दर की आवाज़ सुनने के लिए प्रेरित करती है। जो हमारी अंतरात्मा से निकलती है। उन्होंने कहा कि वो योगिनी होम स्टे के माध्यम से महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा

का कार्य कर रही हैं। लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान आध्यात्मिक सशक्तिकरण के माध्यम से महिला सुरक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि आध्यात्मिकता हमें स्वयं से जोड़ती है। आत्मिक गुणों को बढ़ाती है। चरित्र निर्माण से ही सर्व समस्याएं समाप्त हो जाएंगी। दृष्टिकोण में परिवर्तन की जरूरत है। बच्चे और बच्ची दोनों के साथ समान रूप से बर्ताव की जरूरत है। संस्थान के महिला प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी ने कहा कि नारी केवल स्वयं को सुरक्षित नहीं रखती बल्कि पूरे परिवार को सुरक्षित रखती है। अगर नारी के अन्दर शांति और स्थिरता है तो नारी एक दर्पण बन जाती है। सुरक्षा का स्रोत बन जाती है। सुरक्षा का अर्थ केवल बाहरी नहीं बल्कि आंतरिक स्थिरता से है। दधीचि देह दान समिति से समाज सेविका पूनम मल्होत्रा ने कहा कि आज सबसे बड़ी कमज़ोरी दूषित विचार हैं। आध्यात्मिकता से ही वैचारिक शुद्धि आती है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा इस दिशा में महान कार्य हो रहा है। क्योंकि आध्यात्मिकता ही हमें सकारात्मक और शक्तिशाली बनाती है। महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. सविता ने कहा कि आत्मबल होने से ही हम जीवन को सही दिशा दे सकते हैं। कार्यक्रम में एआईडब्ल्यूसी गाजियाबाद की अध्यक्षा किरण श्रीवास्तव, मेकिंग मॉडल गुरुग्राम की संस्थापक गौरी सरीन, ऑल इंडिया ब्लूमेन लॉयर्स एसोसिएशन की अध्यक्षा डॉ. गीता, फॉर्मूला कार रेसर दिव्या मिगलानी, संस्थान के दिल्ली, करोल बाग की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा दीदी एवं ब्र.कु. शक्ति ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में चांद बजाज ने गीत के द्वारा नारी सम्मान के भावों को प्रकट किया। स्वास्तिक कलाकेन्द्र के कलाकार सिमरन, आरोही एवं आर्या ने जन-जन का कल्याण करेगी नारी... गीत पर नृत्य से सबका मन मोह लिया। मंच संचालन ब्र.कु. लता ने किया।

जीवन के सफर में आध्यात्मिक सिग्नल और नो नेटवर्क ज़ोन बनाएं

बिलासपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ ट्रांसपोर्ट विंग द्वारा शिव-अनुराग भवन में सड़क दुर्घटना पीड़ितों की स्मृति में विश्व यादगार दिवस के अवसर पर आयोजित 'सुहाना सफर' कार्यक्रम में ट्रांसपोर्ट एंड ट्रैवल विंग की नेशनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. कविता,मुंबई ने कहा कि लोग भले कहते हैं कि ज़िंदगी एक सफर है सुहाना, यहाँ कल क्या हो किसने जाना? लेकिन चूंकि भविष्य में परमात्मा द्वारा एक नई दुनिया की स्थापना का दिव्य कर्त्तव्य किया जा रहा है, हम अनुभव करते हैं कि यहाँ कल क्या हो, यह हमने जाना।

मन के विचारों के ट्रैफिक से होती है अक्सर दुर्घटना... उन्होंने कहा कि जब मन के विचारों का ट्रैफिक बहुत बढ़ जाता है, तब दुर्घटनाएं होती हैं – न केवल सड़कों पर, बल्कि शब्दों के माध्यम से भी, जिससे रिश्तों में दूरियां आती हैं।

नो नेटवर्क ज़ोन की अनिवार्यता - आज की टेक्नोलॉजी पर अत्यधिक निर्भरता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने आगे कहा कि हमें साधनों

- **जीवन के सफर को सुहाना बनाने के लिए जरूरी है आध्यात्मिक सिग्नल और नो नेटवर्क ज़ोन- ब्र.कु. कविता दीदी**
- **सड़क दुर्घटना पीड़ितों के प्रति दी गई मौन श्रद्धांजलि एवं प्रभावितों को दिया गया शांति दान**
- **सुरक्षा सेवा में लगे शिक्षाविदों का किया गया सम्मान**

का उपयोग करना चाहिए, न कि साधन हमारा उपयोग करें। इसके लिए उन्होंने सभी को प्रतिदिन एक 'नो नेटवर्क ज़ोन' बनाने की सलाह दी। यह समय 10 मिनट से 60 मिनट तक का हो सकता है, जब हम इन साधनों से दूर रहें। रेलवे पुलिस महानिरीक्षक मुनव्वर खुर्शीद साहिब ने कहा कि भारतीय रेल रोज़ 2 करोड़ 40 लाख लोगों को सफर कराती है। 'सेफ ड्राइविंग, लेन ड्राइविंग इज सेव ड्राइविंग' और हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि घर पर कोई हमारा इंतजार कर रहा है। **सम्मान समारोह समाज सेवा में कार्यरत यातायात पुलिस, रेलवे सुरक्षा बल और भूतपूर्व सैनिकों को मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया।** कार्यक्रम में ब्र.कु. मंजू ने भी अपने विचार रखे। इसके अतिरिक्त बिलासपुर के एसई सीएल संस्थान में सीएमडी, एचओडी एवं एम्प्लॉइज के सम्मुख, आरपीएफ बैरक में रेलवे सुरक्षा बल दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे बिलासपुर के सहायक सुरक्षा आयुक्त - सुरेश पी.अत्री, सहायक सुरक्षा आयुक्त, अपराध व आसूचना,राकेश कुमार, सहायक सुरक्षा आयुक्त, मुख्यालय,संजय कुमार साहू, पुलिस महानिरीक्षक, रेलवे पुलिस, रायपुर के एडिशनल कलेक्टर हर्ष पाठक, महायोग पीठधारा के आचार्य मनोहर भंडारी गुरुजी, रेल सुरक्षा बल के वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त दिनेश सिंह तोमर सहित अनेक गणमान्य नागरिक शामिल रहे।

आध्यात्मिकता ही भरती है अंदर का खालीपन - मेजर जनरल

गुरुग्राम-ओआरसी(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में सुरक्षा बलों के लिए तीन दिवसीय 'सेल्फ एम्पॉवरमेंट फॉर मैनेजिंग चैलेंजेस' विषय पर कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। जिसमें भारतीय सेना एवं सुरक्षा बलों के अधिकारियों ने भाग लिया। भारतीय सेना में सेवारत मेजर जनरल गोपाल वर्मा ने कहा कि शारीरिक रूप से सक्षम होने के बाद भी व्यक्ति अपने को कमज़ोर महसूस करता है। जिसका मूल कारण आंतरिक शक्ति की कमी है। बाहर से तो हर कोई अपने को भर रहा है। लेकिन अंदर खालीपन बढ़ रहा है। आध्यात्मिकता हमें भीतर से जागृत करती है। भारतीय रक्षा लेखा सेवा की पूर्व सीजीडीए देविका रघुवंशी ने कहा कि काफी समय से वो राजयोग का अभ्यास कर रही हैं। अपना अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा कि बिना आत्मबल के जीवन में खुशहाली नहीं आ सकती। भारतीय नौसेना के सेवानिवृत्त वाइस एडमिरल दीपक कपूर ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ जीवन जीने की कला सिखाती

- **भारत सरकार तथा ब्रह्माकुमारीज़ के सुरक्षा बलों के बीच हुए बेनिफिशियल एमओयू के तहत कार्यक्रम का आयोजन**
- **सुरक्षा बलों के लिए तीन दिवसीय 'सेल्फ एम्पॉवरमेंट फॉर मैनेजिंग चैलेंजेस' विषय पर कार्यक्रम**
- **सुरक्षा बलों के 20 संगठनों से 400 से अधिक अधिकारियों ने लिया लाभ**

है। आध्यात्मिकता हमें चेतना की गहराई में ले जाती है। जिससे हमारी आंतरिक शक्तियां और गुण जागृत होते हैं। सीमा सड़क संगठन के अतिरिक्त महानिदेशक हरेन्द्र कुमार ने कहा कि आध्यात्मिकता ही वो शक्ति है, जो सकारात्मक सोच पैदा करती है। सुरक्षा प्रभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी ने कहा कि किसी भी समस्या की असली शुरुआत हमारे मन से होती है। आध्यात्मिकता हमें आत्मा के मूल गुणों से जोड़ती है। कार्यक्रम की शुरुआत भारतीय नौसेना के कैप्टन शिव सिंह ने संस्थान के सुरक्षा प्रभाग द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी देकर की। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य सुरक्षा बलों का आंतरिक सशक्तिकरण करना है। जिससे कि वो आने वाली चुनौतियों का सामना कर सकें। मुंबई से आई ब्र.कु. दीपा ने सबको राजयोग का अभ्यास कराया। मंच संचालन भारतीय सेना के सेवानिवृत्त कर्नल बीसी सती ने किया। कार्यक्रम में सुरक्षा बलों के 20 संगठनों से 400 से भी अधिक अधिकारियों ने भाग लिया। जिसमें प्रमुख रूप से भारतीय थल सेना, नौसेना, वायु सेना, कोस्ट गार्ड, सीआरपीएफ, बीएसएफ, सीआईएसएफ, आरपीएफ,आईटीबीपी, एसएसबी, एनडीआरएफ, बीआरओ, दिल्ली, हरियाणा, तेलंगाना, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश एवं चंडीगढ़ पुलिस सम्मिलित हुईं। मौके पर भारतीय सेना के सेवानिवृत्त ब्रिगेडियर हरबीर सिंह की भी उपस्थिति रही।